FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 1 of 13

पाठ 10
भक्तिन

महादेवी वर्मा · संस्मरणात्मक रेखाचित्र · NCERT आरोह भाग 2 · CBSE 302

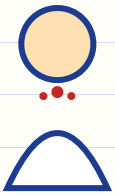

कंठी माला, घुटा सिर

पाठ का मानचित्र (★ = परीक्षा के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण)

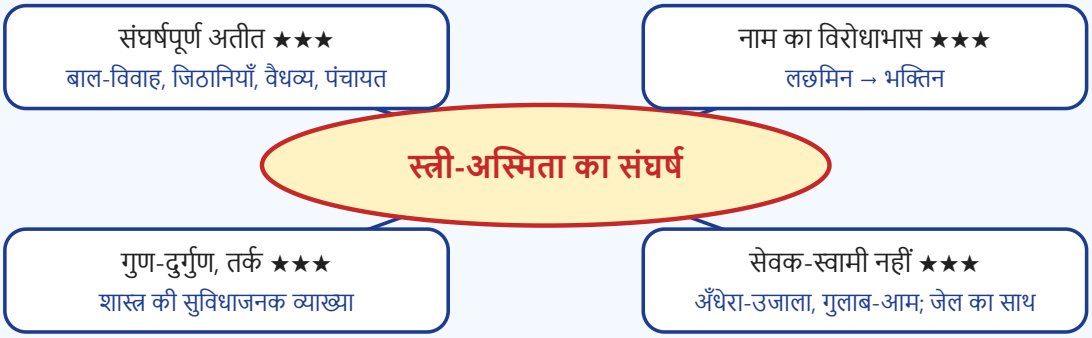

लेखिका परिचय

महादेवी वर्मा (जन्म **1907, फ़र्रुख़ाबाद**, उ.प्र.; निधन **1987, इलाहाबाद**)। काव्य: **दीपशिखा, यामा**; निबंध: **श्रृंखला की कड़ियाँ** (1942, हिंदी में स्त्री-विमर्श की प्रस्तावना), आपदा, संकल्पिता; संस्मरण/रेखाचित्र: **अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ**, पथ के साथी, **मेरा परिवार**। **ज्ञानपीठ** (यामा, 1983), भारत भारती, **पद्मभूषण** (1956)। **छायावाद के चार स्तंभों** में एक (प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी); प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना; गांधी जी के मार्ग पर शिक्षा और समाज-कल्याण। गद्य में **शोषित-पीड़ित जन** को नायकत्व दिया।

★ **परीक्षा-सुझाव:** 2025–26 के **11 प्रश्न-पत्रों** में इस पाठ से **15 प्रश्न** (पूरे पाठ्यक्रम में सबसे अधिक!): **3 पठित गद्यांश** (5-5 MCQ) और 12 लघु उत्तरीय। हर प्रश्न-पत्र में भक्तिन से कुछ न कुछ। प्रिय विषय: **भक्तिन-महादेवी संबंध** (4), **चरित्र, तर्क, समस्याएँ, निष्ठा, बेटियों की लड़ाई, नाम का विरोधाभास, कोयले की रेखा, सम्मान का मापदंड**।

पाठ के बारे में: 'भक्तिन' महादेवी का प्रसिद्ध **संस्मरणात्मक रेखाचित्र** है, जो **'स्मृति की रेखाएँ'** में संकलित है। इसमें लेखिका ने अपनी सेविका भक्तिन के **अतीत और वर्तमान** का परिचय देते हुए उसका व्यक्तित्व उकेरा है: **पितृसत्तात्मक** मान्यताओं और छल-छद्म भरे समाज में अपने और बेटियों के हक के लिए लड़ने वाली, **संघर्षशील, स्वाभिमानी, कर्मठ** स्त्री; परिस्थितिवश अक्खड़, पर महादेवी के प्रति अनन्य आत्मीयता से भरी। पाठ = **स्त्री-अस्मिता** की संघर्षपूर्ण आवाज़।

10.1 पाठ-सार (भाग-वार) ★★★

1. परिचय और नाम का विरोधाभास

छोटे कद और दुबले शरीर वाली भक्तिन के पतले ओठों के कोनों में **दृढ़ संकल्प** और छोटी आँखों में **विचित्र समझदारी** झलकती थी। वह **प्रयाग के पास झूँसी** (ऐतिहासिक प्रतिष्ठानपुरी) के एक प्रसिद्ध **सूरमा** की इकलौती बेटी थी। उसका असली नाम **लछमिन (लक्ष्मी)** था, पर उसकी दरिद्रता इस नाम के विपरीत थी, इसलिए वह नाम छिपाती थी। लेखिका ने उसके **घुटे हुए सिर और गले में कंठी-माला** को देखकर उसका नाम '**भक्तिन**' रख दिया। लेखिका कहती हैं: '**जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है**' (उनका अपना नाम 'महादेवी' भी बड़ा था)।

2. बचपन और विवाह

पाँच वर्ष की आयु में उसका **बाल-विवाह** हँडिया गाँव के एक संपन्न गोपालक के सबसे छोटे बेटे से हुआ; नौ वर्ष में **गौना**। **विमाता** (सौतेली माँ) ने पिता की मृत्यु का समाचार देर से भेजा; जब वह मायके पहुँची तो पिता नहीं रहे थे। अपमानित होकर वह ससुराल लौट आई और फिर कभी मायके का पानी नहीं पिया।

3. ससुराल का संघर्ष: पुत्र-महिमा

भक्तिन ने **तीन बेटियों** को जन्म दिया ('पहली कन्या के **दो संस्करण** और कर डाले'), जबकि जिठानियों ने बेटे जने। **पुत्र-महिमा में अंधी जिठानियों** और सास ने उसकी उपेक्षा की: जिठानियाँ आराम करतीं, बेटे दूध-मलाई खाते, जबकि भक्तिन और उसकी बेटियाँ घर का सारा कठोर काम करतीं और **काले गुड़ की डली, मट्ठा, चना-बाजरे** पर गुज़ारा करतीं। पर उसका **पति** उसे बहुत चाहता था। दोनों ने **अलगौझा (बँटवारा)** कर लिया और अपने परिश्रम से खेत, गाय-भैंस, फलों के पेड़ों से संपन्न हो गए।

4. वैधव्य और संपत्ति की लड़ाई

बड़ी बेटी का विवाह करने के बाद पति की मृत्यु हो गई; भक्तिन केवल **29 वर्ष** की थी। **जेठ-जिठौत** उसकी संपत्ति हड़पने के लिए उस पर **दूसरा विवाह** करने का दबाव डालने लगे। भक्तिन ने **सिर मुँडवा** लिया, कंठी बाँध ली (भक्तिन बनी) और दृढ़ता से मना कर दिया: 'हम कुकुरी बिलारी न होयँ... तुम्हार पचै की छाती पै होरहा भूँजब और राज करब'। उसने छोटी बेटियों के विवाह किए और बड़े दामाद को **घरजमाई** बनाकर रखा।

5. बेटी पर पंचायत का अन्याय

दुर्भाग्य से बड़ा दामाद भी मर गया; बेटी **विधवा** हो गई। जिठौत ने संपत्ति के लालच में अपने एक **तीतरबाज़, निकम्मे साले** से उसका विवाह कराना चाहा। एक दिन वह युवक भक्तिन की अनुपस्थिति में बेटी की कोठरी में घुस गया; बेटी ने उसकी पिटाई की, पर **पंचायत** ने बिना न्याय किए '**अपीलहीन फ़ैसला**' सुना दिया कि दोनों को **पति-पत्नी** के रूप में रहना होगा। बेटी पर **ज़बरन पति थोप दिया** गया। (यह **स्त्री के मानवाधिकार** कुचलने वाली परंपरा का प्रतीक है।)

6. गाँव छोड़ना

निकम्मा दामाद घर की संपत्ति उड़ाता रहा; खेती चौपट हुई; **लगान** न चुका पाने पर ज़मींदार ने भक्तिन को **दिन भर कड़ी धूप में खड़ा** रखा। इस **अपमान** से आहत भक्तिन कमाई के लिए गाँव छोड़कर **शहर** आ गई और महादेवी की सेविका बनी।

> ★ **परीक्षा-सुझाव: पाठ में वर्णित समस्याएँ (बोर्ड 2026):** (1) **बाल-विवाह** (5 वर्ष में); (2) **पुत्र-मोह** और कन्याओं की उपेक्षा; (3) **विधवा की संपत्ति** हड़पने के लिए पुनर्विवाह का दबाव; (4) **पंचायत** द्वारा स्त्री पर ज़बरन पति थोपना; (5) **ज़मींदारी शोषण**, लगान के लिए अपमान; (6) विमाता का व्यवहार।

7. सेविका के रूप में भक्तिन

पहले ही दिन भक्तिन ने **सवेरे नहाकर** धुली धोती को जल के छींटों से पवित्र करके पहना, फिर **चौके में कोयले की मोटी रेखा** खींच दी, जो **लक्ष्मण के धनुष से खींची रेखा** की तरह **दुर्लंघ्य** हो गई: उसके चौके में (उसकी अनुमति

के बिना) कोई नहीं जा सकता था, लेखिका भी नहीं। वह रसोई में **छूत-छात** और अपने नियमों पर अडिग रहती थी। उसने लेखिका को **देहाती** भोजन (मोटी रोटियाँ, मकई का दलिया, ज्वार के भुने भुट्टे, बाजरे के तिल वाले पुए, कच्ची-पक्की चटनी) खिलाया। भक्तिन स्वयं **नहीं बदली**, बल्कि लेखिका को **अपने जैसा देहाती** बना दिया: 'भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गईं।'

8. भक्तिन के गुण-दुर्गुण और तर्क

'**भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा**, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं।' वह इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये **भंडार-घर की मटकी** में छिपा देती और इसे चोरी नहीं, 'सँभालकर रखना' मानती। लेखिका को क्रोध न आए, इसलिए बातों को **इधर-उधर करके** (ढालकर) बताती और इसे झूठ नहीं मानती: 'इतनी चोरी और इतना झूठ तो **धर्मराज महाराज** में भी होगा'। वह **सत्यवादी हरिश्चंद्र** नहीं बन सकती, पर '**नरो वा कुंजरो वा**' (युधिष्ठिर का अर्धसत्य) में भी विश्वास नहीं करती। **शास्त्र की सुविधाजनक व्याख्या:** जब लेखिका ने सिर मुँडाने से रोका, तो बोली: '**तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध**' (शास्त्र में लिखा है)। पढ़ने-लिखने से बचने के लिए तर्क दिया: 'हमारे मालकिन तौ रात-दिन किताबियन माँ गड़ी रहती हैं। अब हमहूँ पढ़े लागब तो घर-गिरिस्ती कउन देखी-सुनी।' वह कभी **अँगूठा-छाप** होने पर लज्जित नहीं हुई।

9. साहित्यकारों के प्रति सम्मान का मापदंड

भक्तिन के मन में आने वाले साहित्यिक बंधुओं के प्रति **सम्मान की मात्रा उतनी ही** होती थी, **जितनी उनके मन में लेखिका के प्रति** हो। लेखिका का कौन कितना सम्मान करता है, यह वह अपनी **सहज बुद्धि** से अद्‌भुत ढंग से जान लेती थी: यह उसका **विस्मित करने वाला गुण** था।

10. युद्ध, जेल और भक्तिन का साथ

भक्तिन **कारागार से यमलोक की तरह डरती** है; ऊँची दीवार देखते ही बेहोश होना चाहती है। पर **डर से भी अधिक महत्त्व लेखिका के साथ** का है: लेखिका के जेल जाने की बात पर वह धोतियाँ धोने और सामान बाँधने की तैयारी करती है; 'ऐसी यात्रा में किसी को किसी के साथ जाने का अधिकार नहीं', यह आश्वासन उसके लिए बेकार है; लेखिका के न जाने से वह उतनी प्रसन्न नहीं होती, जितनी अपने साथ न जा सकने की संभावना से **अपमानित**।

युद्ध के दिनों में जब शहर में भय था, भक्तिन ने लेखिका से अपने गाँव चलने का आग्रह किया; वहाँ रहने का प्रबंध अपनी **जमा पूँजी** से करने का प्रस्ताव दिया ('**उदारता का डाइनामाइट**', जिसने उसकी पर्वताकार **कंजूसी** उड़ा दी)।

11. सेवक-स्वामी का संबंध नहीं

'भक्तिन और मेरे बीच में सेवक-स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है': ऐसा कोई स्वामी नहीं जो इच्छा होने पर भी सेवक को हटा न सके, और ऐसा कोई सेवक नहीं जो जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से **हँस** दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना घर में आने-जाने वाले **अँधेरे-उजाले** और आँगन के **गुलाब और आम** को सेवक मानना: वह लेखिका के जीवन का **स्वाभाविक, अनिवार्य अंग** बन चुकी थी। लेखिका उसे खोना नहीं चाहतीं।

10.2 भक्तिन का चरित्र-चित्रण ★★★

गुण	उदाहरण
संघर्षशील, साहसी	जिठानियों, जेठ-जिठौत, पंचायत, ज़मींदार से अकेले लड़ी
स्वाभिमानी	मायके का पानी न पिया; दूसरा विवाह ठुकराया; 'हम कुकुरी बिलारी न होयँ'
कर्मठ, परिश्रमी	अलगौझा के बाद मेहनत से संपन्नता; महादेवी का पूरा घर सँभाला
अक्खड़, हठी	चौके की कोयले की रेखा; अपने नियम; अपने को नहीं बदला
तर्क-कुशल	'तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध'; चोरी-झूठ की सुविधाजनक व्याख्या
सेवा-भाव, निष्ठा	लेखिका की सेवा जीवन का परम कर्तव्य; जेल तक साथ जाने को तैयार
आत्मीय, उदार	युद्ध के समय गाँव ले जाने का प्रस्ताव, अपनी पूँजी से प्रबंध

सहज बुद्धि	कौन लेखिका का कितना सम्मान करता है, जान लेती
दुर्गुण	पैसे छिपाना, बातें ढालकर बताना, कंजूसी, पढ़ाई से बचना, अड़ियलपन

★ **परीक्षा-सुझाव: तर्क-वितर्क की कला और शिक्षा (बोर्ड 2026):** भक्तिन अनपढ़ थी, फिर भी तर्क में **तर्क-शिरोमणि** को भी हरा देती थी: (1) सिर मुँडाने पर 'तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध' कहकर शास्त्र का हवाला; (2) पैसे उठाने को चोरी नहीं, 'सँभालकर रखना' मानना; (3) पढ़ाई से बचने के लिए घर-गृहस्थी का तर्क। सिद्ध हुआ कि तर्क की कला **सहज बुद्धि और अनुभव** से आती है, शिक्षा से नहीं।

महत्त्वपूर्ण पंक्तियाँ और आशय

पंक्ति	आशय
जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है।	नाम 'लछमिन' (धन की देवी), पर दरिद्र; लेखिका का नाम 'महादेवी', पर साधारण मनुष्य
पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले	दो और बेटियाँ पैदा कीं (व्यंग्य: पुत्र-मोही समाज की दृष्टि)
खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी	बेटियाँ (समाज की दृष्टि में 'खोटे सिक्के') पैदा करने वाली पत्नी
कोयले की रेखा... लक्ष्मण के धनुष से खींची रेखा	चौके की सीमा अलंघ्य; भक्तिन का अधिकार-भाव और छूत-छात
नरो वा कुंजरो वा	युधिष्ठिर का अर्धसत्य; भक्तिन इसमें विश्वास नहीं करती
तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध	शास्त्र की अपनी सुविधा से व्याख्या
उदारता का डाइनामाइट	गाँव में लेखिका का प्रबंध करने का प्रस्ताव, जिसने कंजूसी उड़ा दी
अँधेरे-उजाले, गुलाब और आम को सेवक मानना	भक्तिन लेखिका के जीवन का स्वाभाविक अंग, सेविका नहीं

भक्तिन-महादेवी का संबंध ★★★

(1) **सेवक-स्वामी से ऊपर**: आत्मीय, पारिवारिक; (2) लेखिका उसे हटा नहीं सकतीं, वह जाने का आदेश सुनकर हँस देती है; (3) लेखिका को देहाती बना दिया: भक्तिन का प्रभाव गहरा; (4) जेल तक साथ जाने की तत्परता, युद्ध में गाँव ले जाने का प्रस्ताव; (5) लेखिका उसे **अपने व्यक्तित्व का ज़रूरी अंश** मानकर खोना नहीं चाहतीं।

NCERT अभ्यास, पूरी तरह हल

पाठ के साथ

1. भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

> **उत्तर:** उसका वास्तविक नाम **लछमिन (लक्ष्मी)** था, जो धन-समृद्धि की देवी का नाम है; पर वह अत्यंत **गरीब** थी। नाम और जीवन का यह **विरोधाभास** लोगों के उपहास का कारण बनता, इसलिए वह नाम छिपाती थी। यह नाम **लेखिका (महादेवी)** ने दिया, क्योंकि उसके **घुटे हुए सिर, गले में कंठी-माला** और संन्यासिन-जैसे वेश से वह भक्तिन लगती थी।

2. दो कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं?

> **उत्तर:** आंशिक रूप से। ऐसी घटनाओं में स्त्री ही स्त्री का अपमान करती दिखती है, पर इसका मूल कारण **पितृसत्तात्मक समाज** है, जिसने पुत्र को श्रेष्ठ और कन्या को बोझ माना। जिठानियाँ भी इसी सोच की शिकार थीं; बेटे जनकर उन्हें सम्मान मिला, इसलिए उन्होंने भक्तिन को नीचा दिखाया। अतः स्त्री स्वभावतः स्त्री की दुश्मन

नहीं; **पुत्र-मोही सामाजिक सोच** उसे ऐसा बनाती है। शिक्षा और जागरूकता से स्त्रियाँ एक-दूसरे की सबसे बड़ी सहायक बन सकती हैं।

3. भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा ज़बरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

उत्तर: विधवा बेटी की इच्छा के विरुद्ध, उस युवक के अपराध (ज़बरदस्ती कोठरी में घुसना) को दंडित करने के बजाय, पंचायत ने उसी से विवाह का **अपीलहीन फ़ैसला** सुना दिया। स्त्री से न पूछा गया कि वह विवाह करना चाहती है या नहीं, और किससे। सदियों से समाज स्त्री को **संपत्ति** मानकर उसके विवाह का निर्णय परिवार, जाति, पंचायत करती रही है। अतः यह घटना स्त्री के **विवाह-संबंधी मानवाधिकार** (करें या न करें, किससे करें) को कुचलने वाली परंपरा का प्रतीक है।

4. 'भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं': लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर: भक्तिन में अनेक गुण थे, पर कुछ **दुर्गुण** भी थे: वह लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसे मटकी में छिपा लेती, बातें बदलकर (झूठ) बताती, अपने हिसाब से शास्त्र की व्याख्या करती, हठी और अक्खड़ थी, पढ़ने-लिखने से बचती, दूसरों को बदल देती पर स्वयं नहीं बदलती। लेखिका ने **ईमानदारी** से उसके गुण-दोष दोनों दिखाए, इसलिए ऐसा कहा।

5. भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

उत्तर: लेखिका को स्त्रियों का **सिर घुटाना** पसंद नहीं था। उन्होंने भक्तिन को मना किया तो उसने कहा: '**तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध**' (शास्त्र में लिखा है कि तीर्थ जाकर सिर मुँडाने से सिद्धि मिलती है)। यह वचन किस शास्त्र का है, यह जाने बिना भी उसने इसे अपनी सुविधा के लिए प्रयोग कर लिया।

6. भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गईं?

उत्तर: भक्तिन देहाती थी और उसने स्वयं को **बदला नहीं**; उल्टे लेखिका के खान-पान और रहन-सहन को अपने अनुसार बदल दिया। वह मोटी रोटियाँ, मकई का दलिया, ज्वार के भुने भुट्टे, बाजरे के तिल वाले पुए, कच्ची-पक्की चटनी बनाती; लेखिका को वही खाना पड़ा। वह गाँव की बातें, लोक-विश्वास और बोली भी साथ लाई। इस प्रकार लेखिका **अधिक देहाती** हो गईं।

पाठ के आसपास

उत्तर: 1. बेबी हालदार (आलो आँधारि) और भक्तिन: दोनों **घरेलू कामकाजी** स्त्रियाँ; दोनों **पितृसत्ता और पारिवारिक उपेक्षा** से पीड़ित (बेबी का बाल-विवाह, पति का उत्पीड़न; भक्तिन का बाल-विवाह, जिठानियों का अत्याचार); दोनों **संघर्षशील, स्वाभिमानी**; घर छोड़कर शहर आईं; दोनों को सहृदय मालिक मिले। अंतर: बेबी ने पढ़ना-लिखना सीखकर अपनी आत्मकथा लिखी, भक्तिन ने पढ़ने से इनकार किया।

उत्तर: 2. आज की पंचायतें: आज भी कुछ स्थानों पर खाप पंचायतें प्रेम-विवाह करने वालों को दंड देती, ज़बरन विवाह/तलाक़ के फ़ैसले सुनाती हैं; यह भक्तिन की बेटी के प्रसंग जैसा ही है; न्यायालय ऐसे फ़ैसलों को अवैध घोषित करते हैं।

उत्तर: 3. बाल-विवाह: बाल-विवाह निषेध अधिनियम (2006) के अनुसार लड़की 18, लड़का 21 वर्ष से पहले विवाह अपराध है; फिर भी कहीं-कहीं ऐसी घटनाएँ होती हैं; इससे शिक्षा, स्वास्थ्य और अधिकार छिनते हैं।

उत्तर: 4. महादेवी के पशु-पक्षी: हिरनी सोना, कुत्ता बसंत, बिल्ली गोधूलि; रेखाचित्र-संग्रह '**मेरा परिवार**'।

भाषा की बात

उत्तर: 1. (क) **पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले** = पहली बेटी के बाद दो और बेटियाँ पैदा कीं (व्यंग्य)। (ख) **खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी** = बेटियाँ जनने वाली पत्नी, जिसे पुत्र-मोही समाज 'खोटे सिक्के बनाने वाली टकसाल' मानता है। (ग) **अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण** = बार-बार दोहराई जाने वाली अस्पष्ट बातें, पर उनमें स्पष्ट सहानुभूति का भाव।

उत्तर: 2. पुंलिंग प्रत्यय: बहन + ओई = बहनोई; ननद + ओई = ननदोई; (ससुर से ससुराल नहीं); अन्य भाषाओं में दुर्लभ।

उत्तर: 3. खड़ी बोली रूपांतरण: (क) यह कौन-सी बड़ी बात है! रोटी बनाना जानती हूँ, दाल पका लेती हूँ, साग-सब्ज़ी छौंक सकती हूँ, और बाकी क्या रहा? (ख) हमारी मालकिन तो रात-दिन किताबों में डूबी रहती हैं; अब मैं भी पढ़ने लगूँगी तो घर-गृहस्थी कौन देखेगा-सुनेगा? (ग) वह बेचारी तो रात-दिन काम में झुकी रहती है और तुम लोग घूमती-फिरती हो; चलो, थोड़ा हाथ बँटा लो। (घ) तब वह कुछ करेगा-धरेगा नहीं, बस गली-गली गाता-बजाता फिरेगा। (ङ) तुम लोगों को क्या-क्या बताऊँ, पचास बरस से साथ रहती हूँ। (च) हम कुतिया-बिल्ली नहीं हैं; हमारा मन होगा तो हम दूसरे के जाएँगे, नहीं तो तुम लोगों की छाती पर होला भूनेंगे और राज करेंगे, समझ लो।

उत्तर: 4. विशेष शब्दावली: कंप्यूटर (वायरस, सिस्टम, हैंग), क्रिकेट/फ़ुटबॉल (इनस्विंगर, फ़ाउल, रेड कार्ड, पवेलियन), फ़िल्मी/मुंबइया बोली (टेंसन नई लेने का, अपुन)। ऐसे प्रयोग भाषा को **जीवंत, समकालीन** बनाते हैं।

CBSE बोर्ड प्रश्न 2025–2026, हल सहित

11 प्रश्न-पत्रों में इस पाठ से पूछे गए सभी 15 प्रश्न (3 गद्यांश + 12 लघु), CBSE अंक-योजना के अनुसार उत्तर सहित।

A. पठित गद्यांश (5 × 1)

CBSE 2025 · 2/1/1 गद्यांश: 'भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं। वह सत्यवादी हरिश्चंद्र नहीं बन सकती; पर 'नरो वा कुंजरो वा' कहने में भी विश्वास नहीं करती। मेरे इधर-उधर पड़े पैसे-रुपये, भंडार-घर की किसी मटकी में कैसे अंतरहित हो जाते हैं, यह रहस्य भी भक्तिन जानती है। पर, उस संबंध में किसी के संकेत करते ही वह उसे शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दे डालती है, जिसको स्वीकार कर लेना किसी तर्क-शिरोमणि के लिए संभव नहीं। यह उसका अपना घर ठहरा, पैसा-रुपया जो इधर-उधर पड़ा देखा, सँभालकर रख लिया। यह क्या चोरी है! उसके जीवन का परम कर्तव्य मुझे प्रसन्न रखना है – जिस बात से मुझे क्रोध आ सकता है, उसे बदलकर इधर-उधर करके बताना, क्या झूठ है। इतनी चोरी और इतना झूठ तो धर्मराज महाराज में भी होगा, नहीं तो भगवान जी कैसे प्रसन्न रख सकते और संसार को कैसे चला सकते!'

(i) गद्यांश में 'नरो वा कुंजरो वा' का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है? (A) महाभारत के प्रसंग से अवगत कराने के लिए (B) भक्तिन को युधिष्ठिर के समकक्ष रखने के लिए (C) भक्तिन की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए (D) भक्तिन को युधिष्ठिर से श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए

(ii) भक्तिन घर में पड़े पैसों को मटकी में छिपाकर किस उद्देश्य से रखती थी? (A) पैसों को सँभालकर रखने (B) अन्य सेवकों की दृष्टि से बचाने (C) आपातकाल में काम आने (D) स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ समझने

(iii) 'थोड़ा बहुत झूठ बोलना' के समर्थन में भक्तिन अपना आदर्श किसे मानती थी? (A) हरिश्चंद्र (B) यमराज (C) युधिष्ठिर (D) महादेवी

(iv) कथन: भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा। कारण: समय और परिस्थिति के अनुसार मूल तथ्यों में जोड़-घटाव करती थी। (A) दोनों गलत (B) कारण सही, कथन गलत (C) कथन सही, कारण गलत व्याख्या (D) दोनों सही, कारण सही व्याख्या

(v) महादेवी जी के क्रोध से बचने के लिए भक्तिन क्या करती थी? (A) खूब मन लगाकर काम करती थी (B) बातों को ढालकर बताती थी (C) उनके सामने नहीं आती थी (D) बातों को स्पष्ट रूप से बताती थी [5]

उत्तर: (i) **(C)** चारित्रिक विशेषता स्पष्ट करने के लिए (ii) **(A)** सँभालकर रखने (iii) **(B)** यमराज (धर्मराज = यमराज) (iv) **(D)** दोनों सही, कारण सही व्याख्या (v) **(B)** बातों को ढालकर बताती थी

CBSE 2025 · 2/2/1 गद्यांश: 'भक्तिन की कंजूसी के प्राण पुंजीभूत होते-होते पर्वताकार बन चुके थे; परंतु इस उदारता के डाइनामाइट ने क्षणभर में उन्हें उड़ा दिया। ... भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है, जितना अपने घर में बारी-बारी से आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना।' ('11. सेवक-स्वामी का संबंध नहीं' का प्रसंग)

(i) 'भक्तिन की कंजूसी के प्राण पुंजीभूत होते-होते पर्वताकार बन चुके थे।' – आशय: (A) पैसों के प्रति प्रेम पर्वतों का रूप ले चुका था (B) पैसों के प्रति प्रेम की गाथा दूर-दूर तक फैल चुकी थी (C) एक-एक पैसा कंजूसी से खर्च करती थी (D) एक-एक पैसा जमा करके मोटी पूँजी बना ली थी

(ii) किस 'उदारता के डाइनामाइट' ने महादेवी जी को आश्चर्यचकित कर दिया? (A) गाँव में महादेवी जी के रहने का प्रबंध अपनी पूँजी से करने (B) महादेवी जी को शहर से गाँव ले जाने और रखने के प्रबंध ने (C) अपने घर में सभी सुविधाओं का प्रबंध करने (D) युद्ध की पृष्ठभूमि में सुरक्षा की चिंता करने

(iii) भक्तिन को नौकर कहना क्यों असंगत था? (A) उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व था (B) वह निजी इच्छा के अनुरूप कार्य करती थी (C) वह महादेवी जी के व्यक्तित्व से जुड़ी थी (D) वह महादेवी जी की बात सुनकर हँस देती थी

(iv) अँधेरे-उजाले, आम और गुलाब का उदाहरण किस संदर्भ में दिया गया है? (A) भक्तिन और महादेवी जी के संबंधों के (B) भक्तिन की चारित्रिक विशेषताओं के (C) महादेवी जी की चारित्रिक विशेषताओं के (D) संसार में प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व के

(v) महादेवी जी द्वारा भक्तिन को अपनी सेवा से न हटाने का कारण था, अपने प्रति उसका _____। (A) सेवाभाव (B) अपनत्व (C) सरल व्यवहार (D) निश्छल व्यवहार [5]

> **उत्तर:** (i) **(B)** (ii) **(A)** (iii) **(B)** वह निजी इच्छा के अनुरूप कार्य करती थी (iv) **(A)** भक्तिन और महादेवी जी के संबंधों के (v) **(B)** अपनत्व

CBSE 2025 · 2/5/1 गद्यांश: 'भक्तिन के संस्कार ऐसे हैं कि वह कारागार से वैसे ही डरती है, जैसे यमलोक से। ... वह मेरे न जाने की कल्पना से इतनी प्रसन्न नहीं होती, जितनी अपने साथ न जा सकने की संभावना से अपमानित।' ('10. युद्ध, जेल और भक्तिन का साथ' का प्रसंग)

(i) भक्तिन किससे और कैसे डरती है? (A) लेखिका से यमराज की तरह (B) ज़मींदार से यमराज की तरह (C) कारागार से यमलोक की तरह (D) पिंजड़े से बाघ की तरह

(ii) 'ऐसी यात्रा में किसी को किसी के साथ जाने का अधिकार नहीं' – 'ऐसी यात्रा' से अभिप्राय: (A) जेल यात्रा (B) तीर्थ यात्रा (C) अंतिम यात्रा (D) शोभा यात्रा

(iii) सही कथन: (A) भक्तिन के मन में कारागार का कोई डर नहीं (B) भक्तिन के मन में कारागार से भी बड़ा डर लेखिका का साथ छूटने का है (C) भक्तिन के मन में कारागार से बड़ा कोई डर नहीं (D) भक्तिन कारागार छोड़कर सब जगह लेखिका के साथ जाना चाहती है

(iv) कॉलम मिलान: 1. भक्तिन की निडरता 2. सामान का बाँधना 3. लेखिका के साथ न जा पाना — (i) प्रबंध कौशल (ii) अपमान (iii) असत्य। (A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii) (B) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i) (C) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii) (D) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

(v) गद्यांश का केन्द्रीय भाव: (A) भक्तिन की दूरदर्शिता (B) महादेवी के प्रति आत्मीयता (C) भक्तिन का कारावास से भय (D) भक्तिन का प्रबंध-कौशल [5]

> **उत्तर:** (i) **(C)** कारागार से यमलोक की तरह (ii) **(A)** जेल यात्रा (iii) **(B)** कारागार से भी बड़ा डर लेखिका का साथ छूटने का (iv) **(A)** 1-(iii) असत्य ('वह डरती नहीं, यह कहना असत्य होगा'), 2-(i), 3-(ii) (v) **(B)** महादेवी के प्रति आत्मीयता

B. लघु उत्तरीय

CBSE 2026 · 2/1/1 महादेवी वर्मा ने भक्तिन के साथ अपने संबंध को किस रूप में महसूस किया? [3]

> **उत्तर:** लेखिका ने इसे **सेवक-स्वामी का संबंध नहीं**, बल्कि **आत्मीय, अटूट और स्वाभाविक** संबंध माना: (1) वे इच्छा होने पर भी भक्तिन को सेवा से नहीं हटा सकती थीं और भक्तिन जाने का आदेश सुनकर हँस देती थी; (2) भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत था जितना घर के अँधेरे-उजाले, आँगन के गुलाब और आम को सेवक कहना; (3) भक्तिन जेल तक साथ जाने को तैयार थी और युद्ध में अपनी पूँजी से गाँव में उनका प्रबंध करना चाहती थी; (4) लेखिका उसे अपने व्यक्तित्व का अंश मानकर खोना नहीं चाहती थीं।

CBSE 2026 · 2/4/1 'भक्तिन' पाठ में वर्णित किन्हीं तीन समस्याओं का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए। [3]

> **उत्तर:** (1) **बाल-विवाह:** भक्तिन का विवाह पाँच वर्ष में और गौना नौ वर्ष में। (2) **पुत्र-मोह, कन्याओं की उपेक्षा:** तीन बेटियाँ होने पर जिठानियों-सास ने भक्तिन की उपेक्षा की; बेटे दूध-मलाई खाते, बेटियाँ गुड़-मट्ठा। (3) **विधवा-शोषण:** 29 वर्ष में विधवा होने पर जेठ-जिठौत संपत्ति के लिए पुनर्विवाह का दबाव डालते रहे। (4) **पंचायत का अन्याय:** विधवा बेटी पर ज़बरन निकम्मा पति थोपा गया। (5) **ज़मींदारी शोषण:** लगान न देने पर दिन भर धूप में खड़ा रखना। (कोई तीन)

CBSE 2026 · 2/4/1 'भक्तिन' पाठ में महादेवी जी ने भक्तिन और अपने संबंधों की तुलना किससे और क्यों की है? [2]

> **उत्तर: किससे:** घर में बारी-बारी आने-जाने वाले **अँधेरे-उजाले** और आँगन में फूलने वाले **गुलाब और आम** से। **क्यों:** जैसे ये घर के **स्वाभाविक, अनिवार्य अंग** हैं, सेवक नहीं, वैसे ही भक्तिन भी लेखिका के जीवन का स्वाभाविक अंग बन चुकी थी; उनके बीच **सेवक-स्वामी का संबंध** नहीं, **आत्मीयता** का संबंध था।

CBSE 2026 · 2/3/1 "तर्क-वितर्क करने की कला का शिक्षा से कोई संबंध नहीं है।" भक्तिन के व्यक्तित्व के आधार पर पुष्टि कीजिए। [3]

> **उत्तर:** भक्तिन अनपढ़ (अँगूठा-छाप) थी, फिर भी अपने तर्कों से किसी **तर्क-शिरोमणि** को भी चुप करा देती थी: (1) केश मुँडाने से रोके जाने पर शास्त्र का हवाला: '**तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध**'; (2) घर में इधर-उधर पड़े पैसे उठाने को चोरी नहीं, '**सँभालकर रखना**' मानना; बात ढालकर बताने को झूठ नहीं मानना (धर्मराज का उदाहरण); (3) पढ़ाई से बचने के लिए तर्क: 'मालकिन किताबों में गड़ी रहती हैं, मैं भी पढ़ूँगी तो घर-गृहस्थी कौन देखेगा'। अतः तर्क-कला **सहज बुद्धि और अनुभव** से आती है।

CBSE 2026 · 2/3/1 महादेवी जी के घर आने वाले साहित्यकारों के प्रति भक्तिन के सम्मान का क्या मापदंड था? [2]

> **उत्तर:** भक्तिन के मन में साहित्यिक बंधुओं के प्रति **सम्मान और सद्भाव की मात्रा उतनी ही** होती थी, **जितनी उनके मन में लेखिका के प्रति** हो। लेखिका का कौन कितना सम्मान करता है, यह वह अपनी **सहज बुद्धि** से अद्भुत ढंग से जान लेती थी।

CBSE 2026 · 2/5/1 'भक्तिन' पाठ के आधार पर भक्तिन के चरित्र की किन्हीं तीन विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिन्होंने आपको प्रभावित किया। [3]

> **उत्तर:** (1) **संघर्षशील और साहसी:** जिठानियों की उपेक्षा, जेठ-जिठौत के षड्यंत्र, पंचायत और ज़मींदार के अन्याय का अकेले सामना किया। (2) **स्वाभिमानी:** विधवा होने पर संपत्ति के लालची रिश्तेदारों के दबाव में पुनर्विवाह नहीं किया; सिर मुँडाकर कंठी बाँध ली; मायके का पानी तक न पिया। (3) **सेवा-भाव और निष्ठा:** लेखिका की सेवा को जीवन का परम कर्तव्य माना; जेल तक साथ जाने को तैयार; युद्ध में अपनी पूँजी से उनकी रक्षा का प्रबंध करना चाहा। (अन्य: कर्मठ, तर्क-कुशल।)

CBSE 2026 · 2/2/1 भक्तिन की निष्ठा और सेवा-भाव आज की जीवन-स्थितियों में भी प्रेरणादायक हो सकते हैं? स्पष्ट कीजिए। [2]

उत्तर: हाँ। आज संबंध **स्वार्थ और लेन-देन** पर टिके हैं; भक्तिन ने बिना स्वार्थ लेखिका की सेवा को जीवन का कर्तव्य माना, जेल तक साथ जाने और संकट में अपनी पूँजी लगाने को तैयार रही। उसकी **निष्ठा, कर्तव्यपरायणता और आत्मीयता** हमें सिखाती है कि कार्यस्थल और परिवार में ईमानदारी और समर्पण से ही विश्वास और सम्मान मिलता है।

CBSE 2025 · 2/7/1 महादेवी अपने और भक्तिन के संबंध को सेवक और स्वामी का संबंध क्यों नहीं मानती थी? [3]

उत्तर: (1) ऐसा कोई स्वामी नहीं जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से **हटा न सके**; महादेवी भक्तिन को नहीं हटा सकती थीं। (2) ऐसा कोई सेवक नहीं जो जाने का आदेश पाकर **अवज्ञा से हँस** दे; भक्तिन ऐसा करती थी। (3) भक्तिन लेखिका के जीवन में **अँधेरे-उजाले, गुलाब-आम** की तरह स्वाभाविक रूप से समा गई थी। (4) उनके बीच **आत्मीयता और अपनत्व** का संबंध था; भक्तिन जेल तक साथ जाने को तैयार थी।

CBSE 2025 · 2/6/1 भक्तिन द्वारा चौके में खींची गई कोयले की रेखा महादेवी जी के लिए लक्ष्मण के धनुष से खींची हुई रेखा के समान दुर्लंघ्य क्यों हो उठी? [3]

उत्तर: भक्तिन ने पहले ही दिन स्नान करके, पवित्र धोती पहनकर चौके की सीमा पर **कोयले की मोटी रेखा** खींच दी और घोषित कर दिया कि उसके बिना अनुमति कोई चौके में नहीं आएगा। वह **छूत-छात** और अपने नियमों के प्रति इतनी दृढ़ थी कि उसके चौके में लेखिका भी प्रवेश नहीं कर सकती थीं। जैसे लक्ष्मण-रेखा पार करना संभव नहीं था, वैसे ही यह रेखा लेखिका के लिए **दुर्लंघ्य** हो गई: इससे भक्तिन के **अधिकार-भाव, हठ और परंपराप्रियता** का पता चलता है।

CBSE 2025 · 2/5/1 भक्तिन का कौन-सा गुण विस्मित कर देने वाला था और क्यों? [2]

उत्तर: गुण: अपनी **सहज बुद्धि** के बल पर लोगों के **भाव पहचान** लेना। **क्यों:** वह अनपढ़ होकर भी जान लेती थी कि आने वाले साहित्यकारों में कौन लेखिका का कितना सम्मान करता है, और केवल **लेखिका के प्रति समर्पित** लोगों के प्रति ही विशेष सम्मान रखती थी।

CBSE 2025 · 2/4/1 पितृसत्तात्मक प्रधान समाज में भक्तिन ने अपनी बेटियों के हक की लड़ाई किस प्रकार लड़ी और उसका क्या परिणाम निकला? [3]

उत्तर: लड़ाई: पति की मृत्यु के बाद जेठ-जिठौत संपत्ति हड़पना चाहते थे; भक्तिन ने पुनर्विवाह से इनकार कर सिर मुँडा लिया, अपनी संपत्ति पर अधिकार बनाए रखा, बेटियों के विवाह किए और बड़े दामाद को **घरजमाई** बनाकर संपत्ति बेटी के पास रखी। **परिणाम:** दामाद की मृत्यु के बाद जिठौत ने षड्यंत्र से अपने निकम्मे साले को विधवा बेटी की कोठरी में घुसा दिया; **पंचायत** ने बेटी पर ज़बरन उसे पति के रूप में थोप दिया; निकम्मे दामाद ने संपत्ति नष्ट कर दी; लगान न चुकने पर ज़मींदार ने भक्तिन का अपमान किया और अंततः उसे **गाँव छोड़कर** शहर आना पड़ा। पितृसत्ता के आगे वह हार गई।

CBSE 2025 · 2/4/1 'जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है।' कथन का आशय स्पष्ट करते हुए लिखिए कि महादेवी जी ने ऐसा किस संदर्भ में कहा है? [2]

उत्तर: आशय: व्यक्ति का नाम और उसका वास्तविक जीवन प्रायः एक-दूसरे के **विपरीत** होते हैं। **संदर्भ:** भक्तिन का असली नाम **लछमिन (लक्ष्मी, धन की देवी)** था, पर वह अत्यंत गरीब थी, इसलिए नाम छिपाती थी; लेखिका कहती हैं कि उनका अपना नाम 'महादेवी' भी उनके साधारण मानवीय रूप के विपरीत है।

बोर्ड ने क्या पूछा

प्रकार	2025	2026	कुल
पठित गद्यांश (5 MCQ)	3	0	3
लघु उत्तरीय (2/3 अंक)	5	7	12

त्वरित दोहराव

तथ्य	विवरण
विधा, संग्रह	संस्मरणात्मक रेखाचित्र; 'स्मृति की रेखाएँ'
असली नाम	लछमिन (लक्ष्मी); नाम 'भक्तिन' लेखिका ने दिया
मायका	झूँसी (प्रयाग के पास); सूरमा की इकलौती बेटी
विवाह	5 वर्ष में; गौना 9 वर्ष में; हँडिया गाँव
संतान	तीन बेटियाँ ('दो संस्करण')
वैधव्य	29 वर्ष की आयु
पंचायत	विधवा बेटी पर तीतरबाज़ निकम्मा पति थोपा
गाँव छोड़ना	लगान न चुकने पर ज़मींदार ने धूप में खड़ा रखा
चौका	कोयले की रेखा = लक्ष्मण-रेखा
तर्क	तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध; धर्मराज भी झूठ बोलते
उदारता का डाइनामाइट	युद्ध में गाँव में लेखिका का प्रबंध
संबंध	अँधेरे-उजाले, गुलाब-आम: सेवक-स्वामी नहीं

गद्यांश अभ्यास (उत्तर अंत में)

> भक्तिन और मेरे बीच में सेवक-स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है; क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता, जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया, जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे।

(i) लेखिका भक्तिन को क्यों नहीं हटा सकतीं? (A) डर से (B) आत्मीयता के कारण (C) कानून से (D) भक्तिन के बल से (ii) आदेश पाकर भक्तिन क्या करती है? (A) रोती है (B) चली जाती है (C) अवज्ञा से हँस देती है (D) क्षमा माँगती है (iii) दोनों का संबंध है: (A) सेवक-स्वामी (B) आत्मीयता का (C) व्यावसायिक (D) औपचारिक

A. रिक्त स्थान / सही-गलत

1. 'भक्तिन' _____ संग्रह में संकलित है।
2. भक्तिन का असली नाम _____ था।
3. भक्तिन _____ वर्ष की आयु में विधवा हुई।
4. (सही/गलत) भक्तिन पढ़ना-लिखना सीखने को उत्सुक थी।
5. (सही/गलत) भक्तिन लेखिका के साथ जेल जाने को तैयार थी।
6. (सही/गलत) भक्तिन ने स्वयं को लेखिका के अनुसार बदल लिया।

B. लघु उत्तरीय (2 अंक)

1. भक्तिन ने अपने मायके का पानी क्यों नहीं पिया?
2. जिठानियों और भक्तिन की बेटियों के भोजन में क्या अंतर था?
3. भक्तिन ने सिर क्यों मुँडवाया?
4. 'हम कुकुरी बिलारी न होयँ' से भक्तिन के व्यक्तित्व का कौन-सा पक्ष उभरता है?
5. भक्तिन गाँव छोड़कर शहर क्यों आई?

6. भक्तिन पढ़ने से क्यों बचती थी?
7. 'उदारता का डाइनामाइट' का आशय स्पष्ट कीजिए।

C. विचारात्मक (3 अंक)

1. 'भक्तिन' स्त्री-अस्मिता के संघर्ष की कहानी है: सिद्ध कीजिए।
2. भक्तिन के गुणों और दुर्गुणों का संतुलित विवेचन कीजिए।
3. 'भक्तिन' पाठ के आधार पर महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।
4. पंचायत के फ़ैसले पर अपने विचार लिखिए। क्या आज भी ऐसी घटनाएँ होती हैं?
5. भक्तिन के बचपन से वैधव्य तक के जीवन की प्रमुख घटनाएँ लिखिए।

D. उच्च चिंतन (HOTS)

1. यदि भक्तिन शिक्षित होती तो उसका जीवन कैसे भिन्न होता?
2. घरेलू कामगारों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? भक्तिन-महादेवी संबंध से सीख लिखिए।

बहुविकल्पी प्रश्न: 20 MCQs

1. 'भक्तिन' की विधा है:
(A) निबंध (B) कहानी (C) संस्मरणात्मक रेखाचित्र (D) आत्मकथा

2. 'भक्तिन' किस संग्रह से है?
(A) स्मृति की रेखाएँ (B) अतीत के चलचित्र (C) पथ के साथी (D) मेरा परिवार

3. भक्तिन का असली नाम:
(A) सरस्वती (B) पार्वती (C) सावित्री (D) लछमिन

4. भक्तिन का नाम किसने रखा?
(A) पति ने (B) महादेवी ने (C) सास ने (D) पिता ने

5. भक्तिन का विवाह किस आयु में हुआ?
(A) नौ वर्ष (B) पाँच वर्ष (C) बारह वर्ष (D) पंद्रह वर्ष

6. भक्तिन किस आयु में विधवा हुई?
(A) 19 (B) 40 (C) 36 (D) 29

7. भक्तिन की कितनी बेटियाँ थीं?
(A) तीन (B) दो (C) एक (D) चार

8. विधवा बेटी पर पति किसने थोपा?
(A) सास ने (B) ज़मींदार ने (C) पंचायत ने (D) भक्तिन ने

9. भक्तिन ने गाँव क्यों छोड़ा?
(A) बेटी के कहने पर (B) बाढ़ से (C) बीमारी से (D) ज़मींदार द्वारा अपमान से

10. चौके की कोयले की रेखा की तुलना किससे की गई?
(A) सीमा-रेखा (B) लक्ष्मण-रेखा (लक्ष्मण के धनुष से खींची) (C) भूमध्य-रेखा (D) सरहद

11. 'तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध' किस संदर्भ में कहा?
(A) तीर्थ यात्रा (B) पूजा (C) सिर मुँडाने के समर्थन में (D) पढ़ाई

12. भक्तिन के आने से महादेवी हो गईं:
(A) अधिक देहाती (B) अधिक शहरी (C) अधिक धार्मिक (D) अधिक कठोर

13. भक्तिन पैसे कहाँ छिपाती थी?
(A) संदूक (B) भंडार-घर की मटकी (C) बिस्तर (D) आँगन

14. भक्तिन किससे यमलोक की तरह डरती है?
(A) साँप (B) अँधेरा (C) कारागार (D) ज़मींदार

15. युद्ध के समय भक्तिन ने क्या प्रस्ताव दिया?
(A) बेटी के घर जाने का (B) नौकरी छोड़ने का (C) शहर छोड़ने का (D) लेखिका को अपने गाँव ले जाने का

16. भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना:
(A) अँधेरे-उजाले, गुलाब-आम को सेवक मानना (B) सूरज को दीपक (C) नदी को नाला (D) राजा को रंक

17. भक्तिन का विस्मित करने वाला गुण:
(A) सहज बुद्धि से भाव पहचानना (B) सिलाई (C) पाक-कला (D) गायन

18. महादेवी को किस कृति पर ज्ञानपीठ मिला?
(A) दीपशिखा (B) नीरजा (C) रश्मि (D) यामा

19. 'पहली कन्या के दो संस्करण' का आशय:
(A) दो पुस्तकें (B) दो और बेटियाँ (C) जुड़वाँ बेटे (D) दो चित्र

20. महादेवी छायावाद के किस समूह में आती हैं?
(A) प्रगतिवाद (B) प्रयोगवाद (C) चार स्तंभ (D) नयी कविता

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: भक्तिन अपना असली नाम छिपाती थी। कारण: नाम लक्ष्मी होते हुए भी वह गरीब थी।
2. कथन: भक्तिन ने पुनर्विवाह से इनकार कर सिर मुँडा लिया। कारण: वह जेठ-जिठौत की संपत्ति हड़पने की चाल समझती थी।
3. कथन: भक्तिन पढ़ाई में बहुत रुचि लेती थी। कारण: वह कहती थी कि मालकिन किताबों में गड़ी रहती हैं।
4. कथन: लेखिका भक्तिन को जब चाहें हटा सकती थीं। कारण: उनके बीच सेवक-स्वामी का संबंध नहीं था।
5. कथन: भक्तिन जेल तक लेखिका के साथ जाना चाहती थी। कारण: उसके लिए लेखिका का साथ डर से अधिक महत्त्वपूर्ण था।
6. कथन: 'भक्तिन' एक संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। कारण: महादेवी ने प्रयाग महिला विद्यापीठ की स्थापना की।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (D) · 5 (A) · 6 (B)

उत्तर

गद्यांश अभ्यास. (i) B (ii) C (iii) B.

A. 1. स्मृति की रेखाएँ 2. लछमिन (लक्ष्मी) 3. 29 4. गलत 5. सही 6. गलत (लेखिका को बदल दिया)

B. 1. विमाता ने पिता की मृत्यु का समाचार देर से भेजा; अपमानित होकर। 2. जिठानियों के बेटे दूध-मलाई, भक्तिन की बेटियाँ काला गुड़, मट्ठा, चना-बाजरा। 3. पुनर्विवाह का दबाव ठुकराने और वैराग्य दिखाने के लिए। 4. स्वाभिमान, निर्भीकता, दृढ़ता। 5. निकम्मे दामाद से संपत्ति नष्ट, लगान न चुकने पर ज़मींदार ने धूप में खड़ा रखा (अपमान), कमाई के लिए। 6. घर-गृहस्थी का बहाना; कहती थी मालकिन पढ़ती हैं तो घर कौन देखेगा। 7. कंजूस भक्तिन का युद्ध के समय अपनी जमा पूँजी से लेखिका का प्रबंध करने का प्रस्ताव, जिसने उसकी कंजूसी उड़ा दी।

C. 1. बाल-विवाह, पुत्र-मोह, वैधव्य, संपत्ति, पंचायत, ज़मींदार से अकेला संघर्ष; स्वाभिमान बनाए रखना। 2. गुण: संघर्षशील, स्वाभिमानी, कर्मठ, निष्ठावान; दुर्गुण: पैसे छिपाना, झूठ, हठ, कंजूसी। 3. संवेदनशील, करुणामयी, उदार, ईमानदार (गुण-दोष दोनों दिखाए), स्नेही। 4. स्त्री के मानवाधिकार का हनन; खाप पंचायतें आज भी (स्वतंत्र)। 5. 5 वर्ष में विवाह, 9 में गौना, विमाता, तीन बेटियाँ, उपेक्षा, अलगौझा, 29 में वैधव्य।

D. स्वतंत्र उत्तर।

अंतिम-रात सारांश (परीक्षा से पहले)

- महादेवी वर्मा (1907–1987); छायावाद के चार स्तंभ; यामा (ज्ञानपीठ); 'भक्तिन' = संस्मरणात्मक रेखाचित्र, 'स्मृति की रेखाएँ'।
- लछमिन (नाम का विरोधाभास) → भक्तिन (घुटा सिर, कंठी); झूँसी; 5 में विवाह; तीन बेटियाँ; जिठानियों की उपेक्षा; अलगौझा; 29 में वैधव्य; पुनर्विवाह ठुकराया।

- पंचायत ने विधवा बेटी पर निकम्मा पति थोपा (मानवाधिकार हनन); ज़मींदार का अपमान; शहर आकर महादेवी की सेविका।
- कोयले की रेखा = लक्ष्मण-रेखा; लेखिका को देहाती बनाया; तर्क: तीरथ गए मुँड़ाए सिद्ध; पैसे मटकी में, बात ढालकर; धर्मराज का उदाहरण; अनपढ़ पर तर्क-शिरोमणि।
- जेल से यमलोक-सा डर, पर लेखिका का साथ अधिक महत्त्वपूर्ण; उदारता का डाइनामाइट; सम्मान का मापदंड: लेखिका के प्रति सम्मान; अँधेरे-उजाले, गुलाब-आम: सेवक-स्वामी नहीं, आत्मीयता।